128
P
548
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1183/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं॰ Acc. No. 548

19-1
891.431
M278

331

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
10 DEC. 1930

❀ बन्देमातरम् ❀

महिला
राष्ट्रीय बिगुल

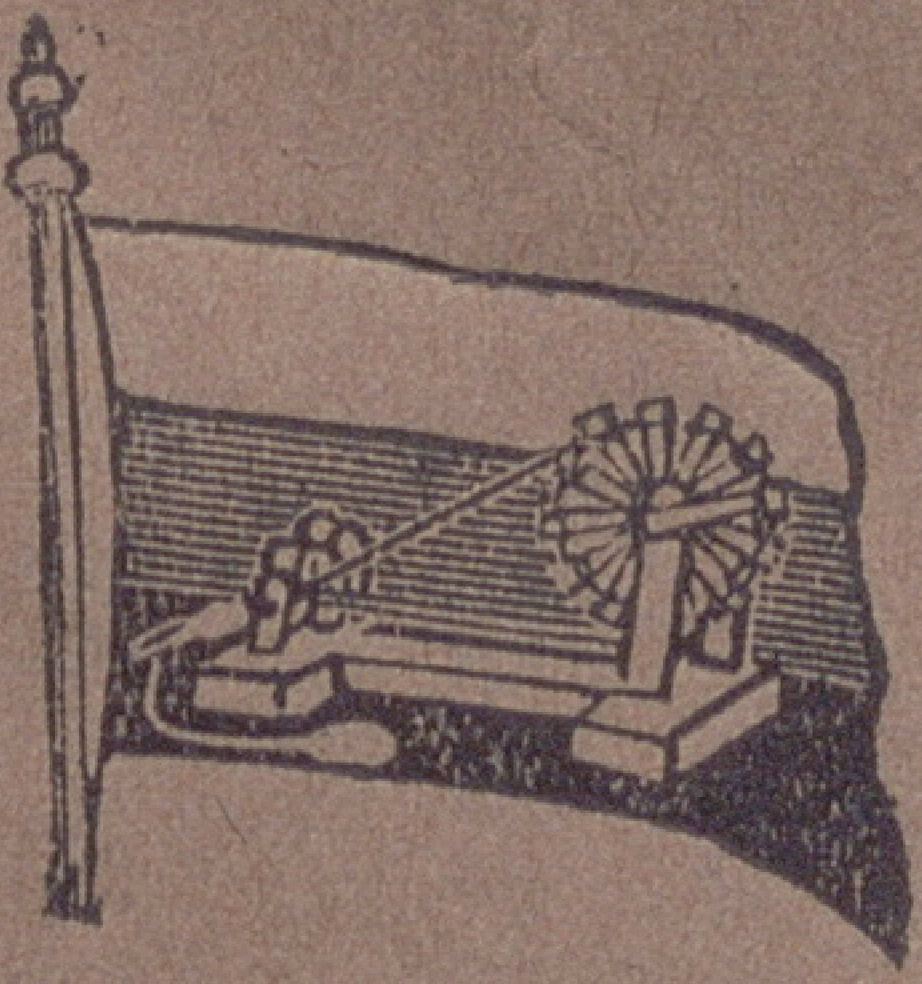

प्रकाशक :—

प्यारेलाल अग्रवाल
संयोजक

गंगाधर गणेश जोग
डिक्टेटर

सत्याग्रह कमेटी, कानपुर

मूल्य दो पैसा

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 548
Date 13-12-71
GOVT. OF INDIA

वन्देमातरम्।

राष्ट्रीय झण्डा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरषाने वाला, बहनों को हरषाने वाला॥
मातृ भूमि का तन मन सारा॥ झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षणक्षण में।
कांपे शत्रु देख कर मन में, मिट जाये भय संकट सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता है ध्येय हमारा॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

आओ प्यारे वीरो आओ, आओ प्यारी बहिनों आओ॥
आओ प्यारे भाइयो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय करके दिखलावे, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

"श्यामलाल गुप्त पार्षद"

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना।

भारत न रह सकेगा, हरगिज़ गुलाम खाना।
आज़ाद होगा होगा, आया है वह ज़माना॥
अब भेड़ और बकरी, बन कर न हम रहेंगी।
इस पस्त हिम्मती का, होगा कहीं ठिकाना॥
खूं खौलने लगा है, भारत की देवियों का।
कर देंगी ज़ालिमों का, अब बन्द जुल्म ढाना॥
परवाह अब किसे है, इस जेल औ दमन की।
एक खेल हो गया है, फांसी पै झूल जाना॥
क़ौमी तिरंगे झण्डे, पर दिल फिदा है अपना।
हिन्दू मसीह मुस्लिम, गाते हैं ये तराना॥
भारत की हम सुताएँ, भारत वतन हमारा।
भारत के वास्ते हैं, मन्जूर सर कटाना॥

ज्योतीशङ्कर (मास्टर नूरा)

स्वराज्य हमारा हक़ है।

हम लेकर छोड़ेंगी इसको स्वराज हमारा हक़ है।
सब कुछ क़ुर्बान करेंगी, वेदी पर शीश धरेंगी॥
बंधन से नहीं डरेंगी, क्या चिंता अगर मरेंगी।
हम लेकर छोड़ेंगी इसको स्वराज हमारा हक़ है॥
भारत यह देश हमारा, है प्राणों से भी प्यारा।
सुख और शान्ति की धारा, तन मन धन इस पर वारा॥
हम लेकर छोड़ेंगी इसको स्वराज हमारा हक़ है।
बहनों सब भेद मिटाओ, वेदी पर बलि बलि जाओ॥
आत्मा का तेज दिखाओ, गांधी की विजय मनाओ।
हम लेकर छोड़ेंगी इसको स्वराज हमारा हक़ है॥

प्रतिज्ञा ।

घर घर में क्रान्ति मचावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ।

देखो, मां का आह्वान हुआ, आज़ादी का सामान हुआ ।
वेदी पर यज्ञ विधान हुआ, फिर मुर्दा जोश जवान हुआ ।

मचला है मन मिट जावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ॥ १ ॥

नवयुग के नवउद्गारों का, दुश्मन के प्रबल प्रहारों का ।
ज़ंजीरों कारागारों का, स्वागत है अत्याचारों का ॥

जीवन का मोह जलावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ॥२

गोदी के लाल लुटावेंगी, माताएं बलि बलि जावेंगी ।
माथे पर शिकन न लावेंगी, पति को पत्नियां पठावेंगी ॥

ज़ालिम सरकार मिटावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ॥

भाइयो और बहिनो आओ, माता का मान बचा जाओ ।
प्राणों की आहुति ले धाओ, गान्धी का हुक्म बजा लाओ ॥

दूषित दासता भगावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ॥४॥

बहिनो ! आओ सुख दुख झेलो, अब उठो आज खुलकर खेलो ।
माता की अब असीस लेलो, मौका है तन मन धन देलो ॥

लन्दन तक शीघ्र हिलावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ॥ ५ ॥

'कंटक'

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना।

भारत न रह सकेगा, हरगिज़ गुलाम खाना।
आज़ाद होगा होगा, आया है वह ज़माना॥
अब भेड़ और बकरी, बन कर न हम रहेंगी।
इस पस्त हिम्मती का, होगा कहीं ठिकाना॥
खूं खौलने लगा है, भारत की देवियों का।
कर देंगी ज़ालिमों का, अब बन्द ज़ुल्म ढाना॥
परवाह अब किसे है, इस जेल औ दमन की।
एक खेल हो गया है, फांसी पै झूल जाना॥
क़ौमी तिरँगे झण्डे, पर दिल फिदा है अपना।
हिन्दू मसीह मुस्लिम, गाते हैं ये तराना॥
भारत की हम सुताएँ, भारत वतन हमारा।
भारत के वास्ते हैं, मञ्जूर सर कटाना॥

ज्योतीशङ्कर (मास्टर नूरा)

स्वराज्य हमारा हक़ है।

हम लेकर छोड़ेंगी इसको स्वराज हमारा हक़ है।
सब कुछ क़ुर्बान करेंगी, बेदी पर शीश धरेंगी॥
बंधन से नहीं डरेंगी, क्या चिंता अगर मरेंगी।
हम लेकर छोड़ेंगी इसको स्वराज हमारा हक़ है॥
भारत यह देश हमारा, है प्राणों से भी प्यारा।
सुख और शान्ति की धारा, तन मन धन इस पर वारा॥
हम लेकर छोड़ेंगी इसको स्वराज हमारा हक़ है।
बहनों सब भेद मिटाओ, वेदी पर बलि बलि जाओ॥
आत्मा का तेज दिखाओ, गांधी की बिजय मनाओ।
हम लेकर छोड़ेंगी इसको स्वराज हमारा हक़ है॥

प्रतिज्ञा ।

घर घर में क्रान्ति मचावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ।

देखो, मां का आह्वान हुआ, आज़ादी का सामान हुआ ।
वेदी पर यज्ञ विधान हुआ, फिर मुर्दा जोश जवान हुआ ।

मचला है मन मिट जावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ॥ १ ॥

नवयुग के नवउद्गारों का, दुश्मन के प्रबल प्रहारों का ।
ज़ंजीरों कारागारों का, स्वागत है अत्याचारों का ॥

जीवन का मोह जलावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ॥२

गोदी के लाल लुटावेंगी, माताएं बलि बलि जावेंगी ।
माथे पर शिकन न लावेंगी, पति को पत्नियां पठावेंगी ॥

ज़ालिम सरकार मिटावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ॥

भाइयो और बहिनो आओ, माता का मान बचा जाओ ।
प्राणों की आहुति ले धाओ, गान्धी का हुक्म बजा लाओ ॥

दूषित दासता भगावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ॥४॥

बहिनो ! आओ सुख दुख झेलो, अब उठो आज खुलकर खेलो ।
माता की अब असीस लेलो, मौका है तन मन धन देलो ॥

लन्दन तक शीघ्र हिलावेंगी ।
भारत स्वाधीन बनावेंगी ॥ ५ ॥

'कंटक'

खद्दर की महत्ता ।

खद्दर लेकर बहने निकलें, घर घर खूब प्रचार करें ।
त्याग विदेशी कपड़ों को अब, भारत का उद्धार करें ॥

मोटा झोटा खायें पहिनें, और अधिक कुछ चाह नहीं ।
नङ्गी भूखा रहें भले ही, इसकी कुछ परवाह नहीं ॥
सहलें सारे अन्यायों को, चुप हो, निकले आह नहीं ।
दिखलादें नौकरशाही को, अब उसका निर्बाह नहीं ॥

जगह जगह पर धरना देकर, चकित सकल संसार करें ।
खद्दर लेकर बहने निकलें, भारत का उद्धार करें ॥

व्यवसायी समाज मिल करके, मातृभूमि हित काम करे ।
किया बहुत कुछ, किन्तु न अब तो, अधिक नाम बदनाम करे
करलें पूर्ण प्रतिज्ञा मन में, कोई न आडर फार्म भरे ।
छुटा विदेशीपन की कालिख, निज पवित्र ध्द्धाम करे

बेचें नहीं विदेशी चिट भी, देशी का व्यापार करें ।
खद्दर लेकर बहने निकलें, भारत का उद्धार करें ॥

देश-वासियो, चलते फिरते, रातो दिन यह ध्यान रहे
खद्दर से उद्धार देश का, होगा यही गुमान रहे ॥
खादी का अरमान रहे नित, जान जाय या जान रहे ।
रहे ध्यान हमको स्वकर्म का, सानुकूल भगवान रहे ॥

चरखा चक्र उठाकर अपना, रिपु-दल का संहार करें ।
खद्दर लेकर बहिनें निकलें, भारत का उद्धार करें ॥

"सन्तप्त"

खादी-गीत।

(१)

खादी के धागे धागे में, अपनेपन का अभिमान भरा।
माता का इसमें मान भरा, अन्यायी का अपमान भरा॥
खादी के रेशे रेशे में, अपने भाई का प्यार भरा।
मां बहिनों का सत्कार भरा, बच्चों का मधुर दुलार भरा॥

(२)

खादी की रजत-चन्द्रिका जब, आकर तन पर मुसकाती है।
तब नवजीवन की नई ज्योति, अन्तस्थल में जग जाती है।
खादी से दीन-निहत्थों की, उत्तप्त-उसास निकलती है।
जिससे मानव क्या पत्थर की, भी छाती कड़ी पिघलती है॥

(३)

खादी में कितने ही दलितों के, दग्ध हृदय की दाह छिपी।
कितनों की कसक-कराह छिपी, कितनों की आहत-आह छिपी॥
खादी में कितने ही नङ्गों, भिखमङ्गों की है आस छिपी।
कितनों की इसमें भूख छिपी, कितनों की इसमें प्यास छिपी॥

(४)

खादी तो कोई लड़ने का, है भड़कीला रण-गान नहीं।
खादी है तीर कमान नहीं, खादी है खड्ग कृपाण नहीं॥
खादी को देख देख तो भी, दुश्मन का दिल थहराता है।
खादी का झंडा सत्य शुभ्र, अब सभी ओर फहराता है॥

(५)

खादी की गंगा जब सिर से, पैरों तक बह लहराती है।
जीवन के कोने कोने की, तब सब कालिख धुल जाती है॥
खादी का ताज चांद सा जब, मस्तक पर चमक दिखाता है।
कितने ही अत्याचार-ग्रस्त, दीनों के त्रास मिटाता है॥

(६)

खादी ही भर भर देश-प्रेम का, प्याला मधुर पिलावेगी।
खादी ही दे दे संजीवन, मुर्दों को पुनः जिलावेगी॥
खादी ही बढ़, चरणों पर पड़, नूपुर सी लिपट मनावेगी।
खादी ही भारत से रूठी, आज़ादी को घर लावेगी॥

–सोहनलाल द्विवेदी।

खादी का डंका

खादी का डंका घर घर में, बजवा दिया गांधी बाबा ने।
मिट्टी में लङ्काशायर को, मिलवा दिया गांधी बाबा ने॥
देशी चद्दर, देशी साड़ी, खादी की धोती कुरती है।
ओढ़ना बिछौना खादी का, सिलवा दिया गांधी बाबा ने॥
मनहूस विदेशी कपड़ों की, जलती हैं भारत में होली।
खादी की आँधी से रिपु को, दहला दिया गाँधी बाबा ने॥
जो पहिन साड़ियां परदेशी, चलती थीं भारत की बहनें!
खादी से उनका सुन्दर तन, सजवा दिया गांधी बाबा ने॥
सिर से पैरों तक है खादी, खादी की सुन्दर गङ्गा में।
है आज ज़माने के दिल को, नहला दिया गांधी बाबा ने॥
अब त्याग विदेशी कपड़ों को, बहनों! पहिनों सुन्दर खादी।
खादी का झण्डा भारत में, गड़वा दिया गांधी बाबा ने॥

आज़ादी पर मर मिटना है, प्राणों की भेंट चढ़ावेंगी

खादी का बाना पहिन लिया, आज़ादी ध्येय हमारा है।
आज़ादी पर मर मिटना है, हमने अब यही बिचारा है॥
प्राणों की भेंट चढ़ावेंगी, हम बलि-वेदी पर जावेंगी।
आज़ादी पर मर मिटना है, प्राणों की भेंट चढ़ावेंगी॥ १

हम अमर, नहीं मरने का डर, यह तो जीने की राह भली।
लक्ष्मी मैना जिससे हैं गयी, है सतियों की यह वही गली॥
जननी के कष्ट छुड़ावेंगी हम बलि-वेदी पर जावेंगी।
आज़ादी पर मर मिटना है, प्राणों की भेंट चढ़ावेंगी॥ २

हम बड़े शौक से पहिनेंगी, पहिनायेंगे जो हथकड़ियां।
जेलों में अलख जगाकर के, तोड़ेंगी माता की कड़िया॥
अन्यायी राज्य मिटावेंगी, हम बलि-वेदी पर जावेंगी।
आज़ादी पर मर मिटना है, प्राणों की भेंट चढ़ावेंगी॥ ३

भालों तलवारों तोपों से, हम कभी नहीं घबरावेंगी।
हम देश प्रेम मतवाली हैं, अब शूली पर चढ़ जावेंगी॥
भारत स्वाधीन बनावेंगी, हम बलि-वेदी पर जावेंगी।
आज़ादी पर मर मिटना है, प्राणों की भेंट चढ़ावेंगी॥ ४

"कंटक"

बिगुल बज गया सुनो हुशियार

बिगुल बज गया सुनो हुशियार। कि बहिनो हो जाओ तैयार॥
छिड़ा है आज़ादी का जङ्ग। उठो फिर लेकर नई उमंग॥
चलो मिल कोटि कोटि एक संग। देख कर दुश्मन होवें दंग॥
तुम्हीं को ताक रहा संसार॥ कि बहनो० ॥

समर का सारा साज सँभाल। चलो, अब छोड़ो सारे ख़्याल।
निडर हो मरकर लो जय-माल। न नीचा हो भारत का भाल॥
मची है चारों ओर पुकार॥ कि बहनों० ॥

डरो मत मन में रक्खो धीर। रहेगा अमर न सदा शरीर॥
गुलामी की तोड़ो ज़ंजीर। अरे टुक देखो माँ की पीर॥
किस लिये चुप बैठीं मन मार॥ कि बहनो० ॥

समर फिर आया वर्षों बाद। क्रान्ति का सुनलो सिंहनिनाद॥
जिओ जग में होकर आज़ाद। या कि फिर हो जाओ बरबाद।
मिटा दो अन्यायी सरकार। कि बहिनो० ॥

देश के कुछ तो आओ काम। चलो भर्ती हो तज धन धाम॥
लजाओ मत माता का नाम। ये गान्धी का अन्तिम संग्राम॥
न आएगा यों बारम्बार॥ कि बहिनो० ॥

सुनो सेनापति का आह्वान। निकालो अब अपने अरमान॥
मचाओ बढ़ बढ़ कर घमसान। चढ़ाओ वेदी पर बलिदान॥
खुला है तुम्हें स्वर्ग का द्वार॥ कि बहनो० ॥

—छैलबिहारी दीक्षित 'कंटक'।

बहिष्कार कर दो।

उठो प्यारी बहिनो ! न रहने कसर दो।
विदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो॥
मुयस्सर जहां पेट भर है न दाना।
गुलामी में मुश्किल हुआ सर उठाना॥
मँगा कर विदेशी वहां धन लुटाना।
तुम्हें चाहिये दिलमें कुछ शर्म खाना॥
मिटा देश जाता है इसकी ख़बर लो।
विदेशी का अब तो बहिष्कार करदो॥ १
मँगाते विदेशी न अब भी हया है।
कहो देश में शेष रह क्या गया है॥
ग़रीबों को चूसा न दिल में दया है।
तुम्हें तो यही काशी है या गया है॥
कहा देश-द्रोही उन्हें यों न ज़र दो।
विदेशी का अब तो बहिष्कार करदो॥ २
बहुत सो चुकीं और लम्बी न तानो।
न यों देश के खून में हाथ सानो॥
बहुत कर लिये पाप अब आप मानो।
चलो देश उत्थान का ठान ठानो॥
स्वदेशी से भारत का भण्डार भरदो।
बहिष्कार कर दो, बहिष्कार कर दो॥ ३

"कंटक"

प्रतिज्ञा।

हमें नहीं प्राणों का भय है, हम हैं मरने वाली।
अपनी आहुतियों से बलि-वेदी को भरने वाली।
हमें तोप तलवारों का बल,
विचलित कर न सकेगा।
अन्यायी तू स्वयं सत्य के,
पथ से, दूर भगेगा।
तुझे दिखा देंगी ज़ालिम हम, क्या हैं करने वाली!
हमें नहीं प्राणों का भय है, हम हैं मरने वाली।
घर से निकल पड़ी हैं हम सब,
पहिन जोगिया बाना।
सतियों ने सतियों के पथ को,
ही निश्चित पथ माना।
निर्भय हैं हम सदा किसी से नहीं हैं, डरने वाली।
हमें नहीं प्राणों का भय है, हम हैं मरने वाली।
हम न रहेंगी तू न रहेगी,
होगी अमर कहानी।
अरी दिवानी नौकरशाही,
करले तू मन—मानी।
बहुत दिनों तक रही भूल में;
तब तक तेरी मानी।

अब आँखे खुल गईं कि हमने,
अपनी गति पहिचानी।
सजग हुईं हम नहीं है पीछे को पग धरने वाली॥
हमें नहीं प्राणों का भय है, हम हैं मरने वाली।
कैसे करें यकीन कि तू है;
सच्चा हितू हमारा।
तूने तो मन में था ज़ालिम,
सत्यानाश विचारा।
अब स्वतन्त्र हम हुईं किसी का,
हमको नहीं सहारा।
अत्याचारों, अन्यायों पर,
हमने सत—व्रत धारा।
कुटिल नीति की अँधियारी का हम हैं हरने वाली।
हमें नहीं प्राणों का भय है, हम हैं मरने वाली।

अभिराम शर्मा।

वालंटियर बनो।

भारत की बहिनों जागो, बदला है अब जमाना।
वालंटियर बनो तुम, अब छोड़ दो बहाना॥
अब बुज़दिली न हरगिज़, तुम पास दो फटकने।
आख़िर तो दम अदम को, होगा कभी रवाना॥
देवी स्वतन्त्रता की, बहनों बनो उपासक।
अब पूर्वजों का अपने, गर नाम है चलाना॥
परदेशियों के इस दम, कपड़े जो हैं पहिनती।

उनको हराम समझो, भारत का अन्न खाना ॥
माता की कोख नाहक़, करती हो तुम कलंकित ।
प्यारे वतन को इस दम, आज़ाद है बनाना ॥
दिल में झिझक न लाओ, आगे कदम बढ़ाओ ।
है स्वर्ग के बराबर, इस वक्त जेल जाना ॥
बहनो ! समय यही है, कुछ करलो देश-सेवा ।
दो दिन की ज़िन्दगी है, इसका नहीं ठिकाना ॥

चरख़ा ।

बहनों चर्खे से देश सुधार है ।
हां--चरख़ा कातो तो बेड़ा पार है ॥
यही गाँधी जी का फ़रमान है ।
हां चरख़ा भारत का कल्यान है ॥
चरख़ा नारियों का शृंगार है ।
हां चरख़ा० ॥ १
चरख़ा लंदन का नीचा दिखायेगा ।
हां स्वराज की राह बतायेगा ॥
इससे दुनियां का उपकार है ।
हां चरख़ा० ॥ २
इससे बढ़ती है कौमी शान भी ।
हां होगा फ़ख्र जहां हिन्दोस्तान भी ॥
सारा चरख़े पै दारो मदार है ।
हां चरख़ा० ॥ ३

गायन

कि बहनों उठो उठो तत्काल,

भाइयो उठो उठो तत्काल ।

जवानो उठो उठो तत्काल ॥

न झुकने देना भारत भाल ।

देश में इतनी है हलचल,

पहनती फिर भी तुम मलमल,

कहाँ इतना अमूल्य पल पल,

कहाँ तुम खोद रही दलदल ।

पहिनना मत परदेशी माल ॥

न लेना तुम परदेशी माल ॥बहन॰ ॥

चाहिये तुम्हें कार्य करना,

दासता अन्धकार हरना

जगत में पशुवत् दिन भरना,

है इससे तो अच्छा मरना ।

काट दो पराधीनता जाल ॥ बहनों॥

अगर लेना है आज़ादी,

तो पहना करो शुद्ध खादी,

रुकेगी इससे बरबादी,

चाल अच्छी अपनी सादी

अरे मत बनों हीन कंगाल ॥ बहनों ॥

हमारा शान्त सत्य संग्राम,

न इसमें हिंसा का कुछ काम,
चाहती हो यदि अपना नाम,
तो बस अब चलो न लो बिश्राम।
खड़ा है सिर पर काल कराल ॥बहनों॥
गुलामी आज़ादी की तोल,
बताओ किसको लोगी मोल?
ज़रा देखो तो हृदय टटोल,
न जाना अपने व्रत से डोल।
बोलना अपने होश संभाल ॥बहनों॥
जहाँ पर चले तोप तलवार,
वहाँ चुप सहती जाना वार,
न हटना पीछे हिम्मत हार,
वहीं देना तन, मन, धन वार,
जीतकर लाना विजय विशाल ॥बहनो॥

अभिराम शर्मा

आंखें खोलो

बिदेशी कपड़ों को फूंक डालो,
न पाप हत्या का ये कमाओ,
हैं जेल में मर रहे हज़ारों,
अरे ज़रा कुछ तो शर्म खाओ।
गुलामी की ये जँ जीर बहिनों,
बँधा है जिससे ये प्यारा भारत,
है फर्ज़ सब मिल के इसको तोड़ो,
औ कैद गांधी की अब छुड़ाओ॥

(२)

है बागे जलियाँ में हमको भूना,
चलाये धरसाने में भी डंडे।
उन्हीं शहीदों की याद करके,
बला है ये दूर इसे भगाओ॥

(३)

निहत्थे दो दो बरस के बच्चे,
औ जवान बुड्ढे पेशावरी थे।
बेदरदी से इनने उनको मारा,
ये हत्या मत अपने सर चढ़ाओ॥

(४)

न उट्ठीं अब भी तो याद रक्खो,
यों मौत कुत्तों की तुम मरोगी।
इसीलिये आओ! आओ!! आओ!!!
कमर कसो दासता मिटाओ॥

(५)

हा! बहने मातायें जेल जायें,
औ दुध मुँहे बच्चे गोली खायें।
उसी समय आप मुँह छिपायें,
न देश के कुछ भी काम आयें।
तो इससे अच्छा है डूब मरना,
न बोझ धरती का अब बढ़ाओ॥

(६)

यहाँ वो एकसठ बरस का गांधी,
हा! जेल में हड्डियां घुलावे।

यहाँ पै तुम सुख की नींद सोओ,
न देश के दुख तुम्हें सतावें ॥
उठो उठो अपनी आँखे खालो,
न कालिख यों मुँह पे तुम लगाओ ॥
गुरुप्रसाद गुरु ।

अन्यायी राज मिटाओ

भारत के भाग जगाओ, अन्यायी राज मिटाओ ।
कपड़ों की भर भर झोली, लावैं बहिनों की टोली,
फिर लगे बिदेशी होली, इसको समझो बम गोली,
सरकारी भूत भगाओ । अन्यायी राज मिटाओ ॥
यह घड़ी न फिर आवेगी, मन की मन रह जावेगी,
जो अब न काम आवेगी, वह कायर कहलावेगी ।
गाँधी को जल्द छुड़ाओ । अन्यायी राज मिटाओ ।
क्यों पाप पिटारी भरतीं, भूखों की रोज़ी हरतीं,
हत्यायें क्यों सिर धरतीं, क्यों नहीं देश पर मरतीं ।
अब समर भूमि में आओ । अन्यायी राज मिटाओ ॥
पैंसठ करोड़ सालाना, देते हो तुम नज़राना,
खाली कर दिया ख़ज़ाना, कुछ इसका हाल न जाना ।
जग पड़ो होश में आओ । अन्यायी राज मिटाओ ॥
भाई जब हुये कसाई, तब गैरों की बन आई ;
पूँजी हो गई सफ़ाई, दीनता देश में छाई ।
मत अपना घर लुटवाओ । अन्यायी राज मिटाओ ॥
"अभिराम शर्मा"

अग्रवाल प्रेस, कानपुर